शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रामायण के अयोध्याकाण्ड में मानव मूल्यों का अध्ययन

श्रीमती माया यादव (शोधार्थी)
डॉ.अनुपमा छाजेड़ (निर्देशक)
प्राध्यापक
के.के. विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय संस्कृति की आधारभूमि में मानवमूल्यों की स्थापना और उनके संरक्षण की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। भारतीय वाङ्मय में रामायण का स्थान इसलिए विशिष्ट है कि इसमें मानवीय जीवन के विविध पक्षों को आदर्श एवं व्यवहार दोनों स्तरों पर प्रस्तुत किया गया है। महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण का अयोध्याकाण्ड विशेष रूप से मानव.मूल्यों के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें राजसत्ता, पारिवारिक संबंध, कर्तव्य, धर्म, सत्य, त्याग, भ्रातृप्रेम, दाम्पत्य-सहधर्मिता, मातृ-पितृभक्ति, आत्मसंयम, लोककल्याण तथा राजधर्म जैसे अनेक मूल्य पात्रों के आचरण और निर्णयों के माध्यम से अभिव्यक्त हुए हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में अयोध्याकाण्ड में मानव-मूल्यों का अध्ययन पाँच प्रमुख मूल्यआयामों आध्यात्मिक, भौतिक, मनोवैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक तथा सार्वभौमिक के आधार पर किया गया है। मानव-मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन को भी अध्ययन का प्रमुख आधार बनाया माना गया है। राम का पितृवचन पालन, सीता का सहधर्मिता-भाव, लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम एवं सेवाभाव, भरत का राज्य-त्याग तथा राजधर्म के प्रति आग्रह, दशरथ का पुत्रप्रेम और कैकेयी के प्रसंग में मूल्य-पतन ये सभी अयोध्याकाण्ड को मानव-मूल्यों के संघर्ष और पुनर्स्थापन का महत्त्वपूर्ण आख्यान बनाते हैं। अयोध्याकाण्ड में मूल्य केवल उपदेश के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की कठिन परिस्थितियों में लिए गए निर्णयों के माध्यम से प्रतिष्ठित होते हैं। राम का चरित्र यह स्थापित करता है कि व्यक्ति की श्रेष्ठता सुख और सत्ता की प्राप्ति में नहीं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य, धर्म और कर्तव्य का पालन करने में है। भरत, सीता और लक्ष्मण के चरित्र इन मूल्यों को अलग-अलग जीवन-संदर्भों में विस्तार प्रदान करते हैं। इस प्रकार अयोध्याकाण्ड व्यक्तिगत नैतिकता से लेकर पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व तक मानव-मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन की व्यापक भारतीय दृष्टि प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द : *वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, मानव मूल्य, राम, सीता, भरत, लक्ष्मण, धर्म, सत्य, त्याग, राजधर्म, लोककल्याण।*

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य की परंपरा में मनुष्य को केवल भौतिक अस्तित्व के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसके जीवन को नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों से संबद्ध माना गया है। सत्य, धर्म, करुणा, त्याग, प्रेम, कर्तव्य, आत्मसंयम, परोपकार, सहिष्णुता और लोककल्याण जैसे मूल्य भारतीय चिंतन की मूल विशेषताएँ हैं। इसी मूल्यपरंपरा का अत्यंत प्रभावशाली साहित्यिक रूप महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण में दिखाई देता है। रामायण का महत्त्व केवल इसलिए नहीं है कि उसमें राम की

जीवन.कथा वर्णित है, बल्कि इसलिए भी है कि इसमें मनुष्य के सामने उपस्थित नैतिक प्रश्नों और जीवन.संघर्षों का अत्यंत संवेदनशील चित्रण हुआ है। व्यक्ति और परिवारए अधिकार और कर्तव्यए सत्ता और नैतिकताए सुख और त्याग तथा व्यक्तिगत इच्छा और लोकहित के बीच उत्पन्न संघर्ष रामायण के कथानक को मानवीय गहराई प्रदान करते हैं। रामायण के सात काण्डों में अयोध्याकाण्ड का विशेष स्थान है। बालकाण्ड में राम के जन्मए शिक्षा और विवाह के प्रसंगों के पश्चात् अयोध्याकाण्ड में उनके जीवन की ऐसी परिस्थिति सामने आती हैए जहाँ उनके आदर्शों की वास्तविक परीक्षा होती है। राज्याभिषेक की तैयारी के बीच अचानक वनवास का निर्णयए दशरथ की विवशताए कैकेयी की मांगए राम का वनगमनए सीता और लक्ष्मण का साथ जाना, दशरथ की मृत्यु, भरत का अयोध्या लौटना तथा राम से उनका मिलन, इन सभी घटनाओं में मानव.मूल्यों के अनेक स्तर दिखाई देते हैं। अयोध्याकाण्ड का मूल प्रश्न यह नहीं है कि राम को राज्य मिला या नहींय इसका वास्तविक प्रश्न यह है कि विपरीत परिस्थिति में मनुष्य अपने मूल्यों को किस प्रकार सुरक्षित रखता है। राम राज्य छोड़कर धर्म को चुनते हैं, सीता सुख छोड़कर सहधर्मिता को चुनती हैं, लक्ष्मण सुविधा छोड़कर सेवा को चुनते हैं और भरत सत्ता छोड़कर भ्रातृ धर्म को स्वीकार करते हैं। इसके विपरीत कैकेयी का प्रसंग यह दिखाता है कि स्वार्थए पुत्रमोह और अधिकारबोध जब विवेक पर हावी हो जाते हैं तो स्थापित पारिवारिक मूल्य संकट में पड़ जाते हैं। इसी दृष्टि से अयोध्याकाण्ड मानव.मूल्यों के संरक्षणए संवर्धन का मुख्य केंद्र भी है। मानव-मूल्यों को पाँच प्रमुख वर्गों में देखा जा सकता है : आध्यात्मिक मूल्य, भौतिक मूल्य, मनोवैज्ञानिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य।

आध्यात्मिक मूल्य : अयोध्याकाण्ड में आध्यात्मिक मूल्यों का केंद्र धर्म, सत्य, कर्तव्य और आत्मसंयम है। राम का वनगमन इस मूल्य.व्यवस्था का सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। राम के सामने राज्य प्राप्त करने का अवसर है, परंतु पिता द्वारा कैकेयी को दिए गए वरदान के कारण उन्हें चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करना पड़ता है। राम इसे केवल पिता का आदेश मानकर नहीं, बल्कि धर्म का पालन मानकर स्वीकार करते हैं।

राम कहते हैं :

“धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम् ।

धर्मसंश्रितमप्येतत् पितुर्वचनमुत्तमम् ॥

अर्थात् संसार में धर्म ही श्रेष्ठ है और धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है। पिता का यह वचन भी धर्म के आश्रित होने के कारण परम उत्तम है।”**1**

यह प्रसंग अयोध्याकाण्ड के आध्यात्मिक मूल्यबोध की आधारभूमि है।

राम के लिए धर्म कोई बाहरी नियम मात्र नहीं है। वह उनके व्यक्तित्व का आंतरिक अनुशासन है। इसी कारण परिस्थिति बदल जाने पर भी उनका आचरण नहीं बदलता। यहाँ राम पिता के वचन और सत्य की रक्षा करके स्थापित नैतिक मूल्य का संरक्षण करते हैं और राम का व्यक्तिगत आचरण सामाजिक आदर्श बन जाता है। इस प्रकार सत्य और धर्म निजी जीवन से निकलकर व्यापक सामाजिक मूल्य में परिवर्तित होते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सत्यनिष्ठा और वचनपालन : अयोध्याकाण्ड का सर्वाधिक प्रभावशाली मूल्य सत्यनिष्ठा है। राम जानते हैं कि वनवास का निर्णय उनके लिए अन्यायपूर्ण परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ हैए फिर भी वे व्यक्तिगत अधिकार की दृष्टि से उसका विरोध नहीं करते।वे यह स्वीकार करते हैं कि पिता द्वारा दिया गया वचन पूरा होना चाहिए। यहाँ सत्य केवल बोलने का गुण नहीं हैय सत्य आचरण की निरंतरता है।राम का यह चरित्र इस बात को स्पष्ट करता है कि नैतिकता की वास्तविक परीक्षा अनुकूल परिस्थितियों में नहींए बल्कि विपरीत परिस्थितियों में होती है।

राम का कथन :

संश्रुत्य च पितुर्वाक्यं मातुर्वा ब्राह्मणस्य वा।

न कर्तव्यं वृथा वीर धर्ममाश्रित्य तिष्ठता॥

अर्थ : धर्म का आश्रय लेकर रहने वाले पुरुष को पिता माता अथवा ब्राह्मण के वचनों का पालन करने की प्रतिज्ञा करके उसे मिथ्या नहीं करना चाहिए।**2** इस दृष्टि से राम का सत्य व्यक्तिगत गुण न रहकर नैतिक उत्तरदायित्व बन जाता है। यह सत्य के संरक्षण व संवर्धन का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है।

त्याग का मूल्य : अयोध्याकाण्ड में त्याग का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। राम राज्य का त्याग करते हैं, सीता राजसुख का त्याग करती हैं, लक्ष्मण पारिवारिक सुविधा का त्याग करते हैं और भरत राज्य का त्याग करते हैं। राम का त्याग विशेष रूप से उल्लेखनीय हैए क्योंकि उन्हें राज्य प्राप्त होने वाला था। वे सत्ता के निकट होते हुए भी सत्ता के मोह में नहीं पड़ते। राम का वनगमन इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसमें त्याग केवल भौतिक वस्तु का नहीं, बल्कि अधिकार बोध का त्याग भी है। राम यह सिद्ध करते हैं कि व्यक्ति की श्रेष्ठता उसके अधिकारों की संख्या से नहींए बल्कि उन अधिकारों के प्रति उसके विवेकपूर्ण व्यवहार से निर्धारित होती है।

सीता में सहधर्मिता और दाम्पत्य मूल्य : अयोध्याकाण्ड में सीता का चरित्र दाम्पत्य सहधर्मिता का अत्यंत प्रभावशाली उदाहरण है। राम जब वन जाने की बात कहते हैं तो सीता राजमहल में रहकर सुख भोगने को स्वीकार नहीं करतीं।

सीता का कथन है :

यदि त्वं प्रस्थितो दुर्गं वनमद्यैव राघव।

अग्रतस्ते गमिष्यामि मृद्नन्ती कुशकण्टकान् ॥

अर्थात् रघुनन्दन! यदि आप आज ही दुर्गम वन की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। तो मैं रास्ते के कुश और काँटों को कुचलती हुई आपके आगे . आगे चलूँगीश।**3**

वाल्मीकि के पाठ में सीता के वनगमन का आग्रह और उसके पीछे उनका दाम्पत्य.धर्म तथा आत्मीयता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यहाँ सीता को केवल पति का अनुसरण करने वाली स्त्री के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। उनके निर्णय में दाम्पत्य-सहभागिता, साहस, आत्मनिर्णय, निष्ठा, कठिन परिस्थिति को स्वीकार करने की क्षमता जैसे मानवीय मूल्य उपस्थित हैं। इस प्रकार सीता का वनगमन दाम्पत्य जीवन में सुख के साथ.साथ दुःख और संघर्ष में भी साझेदारी की भावना को स्थापित करता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लक्ष्मण में भ्रातृ प्रेम और सेवाभाव : लक्ष्मण का चरित्र अयोध्याकाण्ड में भ्रातृप्रेम और निःस्वार्थ सेवा का प्रतिनिधित्व करता है। राम के वनगमन का निर्णय सुनते ही लक्ष्मण भी उनके साथ जाने का निर्णय करते हैं। लक्ष्मण के सामने अयोध्या में रहने का विकल्प थाए किंतु वे अपने सुख को राम की सेवा से ऊपर नहीं रखते। इस प्रकार उनका जीवन यह संदेश देता है कि सच्चा संबंध केवल सुख के समय साथ रहने से नहीं बनता, बल्कि संकट में साथ खड़े होने से बनता है। राम स्वयं लक्ष्मण के प्रति उनके प्रेम को स्वीकार करते हुए कहते हैं :

तव लक्ष्मण जानामि मयि स्नेहमनुत्तमम् ।
विक्रमं चैव सत्त्वं च तेजश्च सुदुरासदम् ॥

लक्ष्मण ! मेरे प्रति जो तुम्हारा परम उत्तम स्नेह है, उसे मैं जानता हूँ । तुम्हारे पराक्रम धैर्य और दुर्धर्ष तेजका भी मुझे ज्ञान है।**4**

राम लक्ष्मण के प्रेम, पराक्रम, धैर्य और तेज को पहचानते हैं। यहाँ भ्रातृप्रेम केवल भावनात्मक संबंध नहीं है वह कर्तव्य और सेवा में परिणत हुआ प्रेम है।

भरत में त्याग और भ्रातृ धर्म : अयोध्याकाण्ड के मानव-मूल्यपरक अध्ययन में भरत का चरित्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भरत को राज्य सहज रूप से मिल सकता था, किंतु वे उस राज्य को स्वीकार नहीं करते। राम और भरत का संबंध सत्ता.संघर्ष के स्थान पर त्याग और भ्रातृप्रेम का उदाहरण बनता है। भरत राम के पास वन जाते हैं और उन्हें अयोध्या लौटकर राज्य स्वीकार करने के लिए कहते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि ज्येष्ठ पुत्र के रहते कनिष्ठ का राजा होना उचित नहीं है।

भरत का कथन है :

शाश्वतोऽयं सदा धर्मः स्थितोऽस्मासु नरर्षभ।
ज्येष्ठपुत्रे स्थिते राजा न कनीयान् भवे न्नृपः॥

अर्थ नरश्रेष्ठ! हमारे यहाँ सदा से ही इस शाश्वत धर्म का पालन होता आया है कि ज्येष्ठ पुत्र के रहते हुए छोटा पुत्र राजा नहीं हो सकता॥**5**

अयोध्याकाण्ड में भरत का यह दृष्टिकोण ज्येष्ठता, राजधर्म और पारिवारिक मर्यादा के प्रति उनके आदर को प्रकट करता है। भरत के चरित्र का महत्त्व इस बात में है कि वे सत्ता के अवसर को नैतिक अधिकार के बिना स्वीकार नहीं करते।

राजधर्म और लोककल्याण : अयोध्याकाण्ड का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष राजधर्म है। राम का भरत से संवाद केवल पारिवारिक संवाद नहीं हैय उसमें शासन और लोककल्याण से संबंधित अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं। राम भरत से राज्य की व्यवस्थाए मंत्री, सेना, प्रजा, अर्थव्यवस्था, सुरक्षा, धर्म तथा प्रशासन आदि के संबंध में प्रश्न करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आदर्श शासन केवल राजा की व्यक्तिगत शक्ति पर आधारित नहीं है।

भौतिक मूल्य : अयोध्याकाण्ड के शतम सर्ग में राम भरत को राज्य-संचालन संबंधी विस्तृत मार्गदर्शन देते हैं। इस सर्ग में भरत की तपस्वी जैसी अवस्था देखकर राम का भ्रातृस्नेह भी प्रकट होता है और उसके बाद राजधर्म से जुड़े प्रश्न सामने आते हैं। राम जब भरत से शासन संबंधी प्रश्न करते हैं तो आदर्श

शासन के अनेक पक्ष स्पष्ट होते हैं। उदाहरण के लिए अयोध्या की समृद्धि, नागरिकों का अनुशासन, विभिन्न वर्गों का अपने कार्य में संलग्न होना और राज्य की सुरक्षा का उल्लेख मिलता है :

वीरैरध्युषितां पूर्वमस्माकं तात पूर्वकैः।

तात ! अयोध्या हमारे वीर पूर्वजों की निवास भूमि है

और फिर कहते है :

ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः स्वकर्मनिरतैः सदा।

जितेन्द्रियैर्महोत्साहैर्वृतामार्यैः सहस्रशः॥

अर्थः अपने अपने कर्मों में लगे हुए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सहस्त्रों की संख्या में वहाँ निवास करते हैं। वे सबके सब महान उत्साही जितेन्द्रिय और श्रेष्ठ हैं।**6**

यह प्रसंग बताता है कि आदर्श राज्य में केवल आर्थिक समृद्धि पर्याप्त नहीं है कर्तव्यनिष्ठ नागरिक,

इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि राजसत्ता का अंतिम उद्देश्य प्रजा का हित और राज्य की सुव्यवस्था है। इस प्रकार भौतिक मूल्य यहाँ केवल धन.संपत्ति तक सीमित नहीं हैं। सुव्यवस्थित शासन, सुरक्षा, आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक संतुलन भी भौतिक जीवन के महत्त्वपूर्ण मूल्य हैं। राम का राजसुख त्यागकर वन जाना भौतिक संपदा के प्रति अनासक्ति दर्शाता है राम भौतिक संपत्ति को जीवन का अंतिम लक्ष्य न मानकर उसके प्रति मर्यादित दृष्टिकोण की रक्षा करते हैं।

राजसत्ता और संपदा का त्याग यह संदेश देता है कि भौतिक साधन साध्य नहीं, बल्कि जीवन के व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति के साधन हैं। अयोध्याकाण्ड में भौतिक मूल्य का अर्थ केवल धन-संपत्ति नहीं है। इसमें सुव्यवस्थित राज्य, प्रजा की सुरक्षा, शासन, प्रशासन और समृद्धि भी सम्मिलित हैं।

आत्मसंयम, सुरक्षा और सामाजिक व्यवस्था भी आवश्यक हैं।

वनगमन के समय राजसी वस्त्र एवं आभूषणों का त्याग, सादगी एवं आवश्यकता आधारित जीवन भौतिक उपभोग के स्थान पर आवश्यकता और संयम को महत्त्व देकर संतुलित जीवन.दृष्टि का संवर्धन होता है। राम और सीता राजसी वैभव का त्याग करके सरल जीवन स्वीकार करते हैं।

सौन्दर्यात्मक मूल्य : मानव-मूल्यों के अध्ययन में सौन्दर्यात्मक मूल्य को केवल प्रकृति या रूप-सौन्दर्य तक सीमित करना उचित नहीं है। अयोध्याकाण्ड में चरित्र और संबंधों का नैतिक सौन्दर्य अधिक महत्त्वपूर्ण है। राम का संयम, सीता की निष्ठा, लक्ष्मण की सेवा और भरत का त्याग मिलकर एक ऐसे चरित्र-सौन्दर्य की रचना करते हैं जो बाहरी रूप से अधिक स्थायी है। राम के व्यक्तित्व में संकट के बीच दिखाई देने वाली शांति, सीता के निर्णय में दिखाई देने वाला साहस, लक्ष्मण की सेवा में दिखाई देने वाली निष्ठा तथा भरत के त्याग में दिखाई देने वाला आत्मसंयम ये सभी मानवीय चरित्र के सौन्दर्य को स्थापित करते हैं। इस प्रकार अयोध्याकाण्ड में सौन्दर्य और नैतिकता एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।राम का निषादराज गुह के प्रति आत्मीय व्यवहार, समानता एवं मानव-गरिमा राम ने सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर गुह को सम्मान दिया।

नवजयनिषादराज गुह को दूर से आया हुआ देखकर श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मण के साथ आगे बढ़कर उससे मिले।**7**

इससे यह सार्वभौमिक विचार पुष्ट होता है कि मनुष्य का सम्मान उसकी सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके मानवीय गुणों से होना चाहिए। राम का ऋषियों एवं वनवासियों के प्रति सम्मान-सह-अस्तित्व एवं सम्मान विभिन्न जीवन-पद्धतियों और समुदायों के प्रति सम्मान की भावना सुरक्षित रहती है।

मनोवैज्ञानिक मूल्य : अयोध्याकाण्ड का एक विशिष्ट पक्ष उसका मनोवैज्ञानिक यथार्थ है। इसमें पात्र केवल आदर्श प्रतिमाएँ नहीं हैं बल्कि वे सुख-दुःख, भय, मोह, प्रेम, क्रोध, अपराधबोध और मानसिक संघर्ष से गुजरते हुए दिखाई देते हैं।

दशरथ का मानसिक संघर्ष : दशरथ एक ओर राम के प्रति गहन पुत्र प्रेम रखते हैं और दूसरी ओर कैकेयी को दिए गए वरदान से बँधे हुए हैं। उनका मानसिक संकट यह दिखाता है कि कभी-कभी व्यक्ति अपने ही पूर्व निर्णयों के परिणाम से पीड़ित होता है।

राम का आत्मसंयम : राम को वनवास का समाचार मिलता है, लेकिन वे अपनी भावनाओं को अनियंत्रित नहीं होने देते। उनका मानसिक संतुलन उनके चरित्र की दृढ़ता का प्रमाण है।

भरत का आत्मग्लानि बोध : भरत जब राम के वनवास की वास्तविकता जानते हैं तो वे स्वयं को इस घटना से मानसिक रूप से जोड़कर देखते हैं। उनका आक्रोश सत्ता प्राप्त करने का नहींए बल्कि राम के साथ हुए अन्याय को लेकर है।

कैकेयी का मनोवैज्ञानिक परिवर्तन : कैकेयी का चरित्र मूल्य-पतन की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने के लिए विशेष महत्त्व रखता है। मंथरा के प्रभाव के पश्चात् उनमें पुत्रमोहए अधिकारबोध और असुरक्षा का प्रभाव बढ़ता है और विवेक पीछे हट जाता है। कैकयी कहती है कि मेरा वर मांगने का समय अभी आया है धीर स्वभाव वाले राम तपस्वी के वेश में वल्कल तथा मृगचर्म धारण करके चौदह वर्षों तक दण्डकारण्य में जाकर रहे। भरत को आज निष्कण्टक युवराजपद प्राप्त हो जाए।**8**

इस प्रकार अयोध्याकाण्ड यह स्पष्ट करता है कि मानव.मूल्य केवल बाहरी परिस्थितियों से निर्धारित नहीं होते व्यक्ति की मानसिक दृष्टि और निर्णय.क्षमता भी उनकी रक्षा में निर्णायक भूमिका निभाती है। कैकेयी राम से स्नेह करने वाली माता हैंए किंतु मंथरा के प्रभाव में उनका दृष्टिकोण बदलता है। उनके भीतर पुत्रमोह और अधिकार बोध इतना प्रबल हो जाता है कि वे दशरथ से दो वरदान माँगती हैं : भरत के लिए राज्य और राम के लिए वनवास।

यहाँ निम्न मूल्य.विघटन दिखाई देता है :

पुत्रमोह → स्वार्थ → अधिकारबोध → विवेक का ह्रास → पारिवारिक विघटन।

इस प्रसंग की विशेषता यह है कि केवल कैकेयी को दोषी ठहराकर कथा को आगे बढ़ाना नहीं है, बल्कि उनके मानसिक परिवर्तन और उसके परिणामों को कथा के माध्यम से सामने रखना भी हैं। इस प्रकार अयोध्याकाण्ड सकारात्मक मूल्यों के साथ यह चेतावनी भी देता है कि जब स्वार्थ विवेक पर हावी होता हैए तब व्यक्ति के निर्णय का प्रभाव केवल उस पर नहींए पूरे परिवार और समाज पर पड़ सकता है।

दशरथ में पितृप्रेम और मानवीय करुणा : दशरथ का चरित्र अयोध्याकाण्ड में अत्यंत करुण और मानवीय है। वे राम से अत्यधिक प्रेम करते हैं। कैकेयी को दिए गए वचन के कारण वे राम को वनवास देने के लिए बाध्य होते हैं, लेकिन उनका हृदय इस निर्णय को स्वीकार नहीं कर पाता। यहाँ दशरथ का चरित्र

यह दिखाता है कि मानवीय जीवन में कर्तव्य और भावना के बीच संघर्ष किस प्रकार व्यक्ति को भीतर से तोड़ सकता है। राम के प्रति उनका प्रेम पारिवारिक मूल्य का प्रतीक हैए जबकि उनके पूर्व दिए गए वचन के प्रति बँध जाना वचनपालन की सामाजिक मर्यादा को सामने लाता है।अतः दशरथ के चरित्र में पितृप्रेम, वचनबद्धता, करुणा और मानसिक द्वंद्व एक साथ दिखाई देते हैं।

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य : अयोध्याकाण्ड के मूल्य केवल अयोध्या के राजपरिवार तक सीमित नहीं हैं। उनमें व्यापक मानवता का संदेश निहित है। राम का व्यक्तित्व सत्य, धर्मए करुणा, आत्मसंयम और लोकहित के समन्वय का उदाहरण है। वे अपने विरोधियों या भिन्न विचार रखने वालों के प्रति भी विवेकपूर्ण दृष्टिकोण रखते हैं। भरत के प्रति उनका विश्वास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जब लक्ष्मण भरत के आगमन को लेकर

आशंकित होते हैं, तब राम भरत के प्रति अविश्वास नहीं करते। यह प्रसंग बताता है कि संबंधों की वास्तविक शक्ति विश्वास में है। इसी प्रकार राम और भरत का मिलन भ्रातृत्व को केवल पारिवारिक संबंध से ऊपर उठाकर सार्वभौमिक मानवीय आदर्श में बदल देता है।

समकालीन संदर्भ में अयोध्याकाण्ड के मानव मूल्य

आज का समाज तकनीकी और भौतिक दृष्टि से निरंतर विकसित हो रहा है, लेकिन मानवीय संबंधों में अनेक प्रकार के तनाव दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में अयोध्याकाण्ड के मूल्य अत्यंत प्रासंगिक दिखाई देते हैं। राम का सत्य हमें यह सिखाता है कि सुविधा के लिए सिद्धांतों का त्याग नहीं होना चाहिए। सिर्फ सुविधा और अधिकार बोध ही जीवन में सबकुछ नहीं है। भरत का चरित्र यह संदेश देता है कि पद और सत्ता से अधिक महत्त्वपूर्ण नैतिक अधिकार है। पवित्रता ही भाई-भाई के स्नेह संबंधों का आधार है सीता का चरित्र कठिन परिस्थितियों में मानसिक दृढ़ता और जीवन सहभागिता का संदेश देता है। लक्ष्मण का चरित्र संबंधों में निःस्वार्थ सेवा की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।दशरथ का चरित्र पारिवारिक प्रेम और भावनात्मक संवेदनशीलता का पक्ष सामने लाता है। कैकेयी का प्रसंग चेतावनी देता है कि स्वार्थ, असुरक्षा और विवेकहीन अधिकारबोध परिवार और समाज दोनों को प्रभावित कर सकते हैं।

इस प्रकार अयोध्याकाण्ड आधुनिक मनुष्य को केवल अतीत का आदर्श नहीं देताए बल्कि वर्तमान जीवन के नैतिक प्रश्नों पर विचार करने की दृष्टि भी प्रदान करता है।

निष्कर्ष

वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड का मानव.मूल्यपरक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह काण्ड केवल राम के वनवास की कथा नहीं है, बल्कि मानव जीवन में मूल्यों की परीक्षा, संघर्ष, संरक्षण और संवर्धन का व्यापक आख्यान है। राम का चरित्र अयोध्याकाण्ड में सत्य, धर्म, वचनपालन, त्याग, आत्मसंयम और कर्तव्यनिष्ठा का आदर्श प्रस्तुत करता है। उनके लिए राज्य से अधिक महत्त्वपूर्ण धर्म है और व्यक्तिगत सुख से अधिक महत्त्वपूर्ण पिता के वचन की रक्षा। इसी कारण उनका वनगमन भारतीय साहित्य में त्याग और कर्तव्य का श्रेष्ठ उदाहरण बन जाता है। सीता के चरित्र में दाम्पत्य.सहधर्मिता, साहस, निष्ठा और मानसिक दृढ़ता दिखाई देती है। वे जीवन के सुख में ही नहीं, बल्कि कठिनाई में भी पति के साथ रहने का निर्णय करती हैं। लक्ष्मण भ्रातृप्रेम, सेवा और त्याग को अपने जीवन का आधार

बनाते हैं। भरत का चरित्र सत्ता के प्रति अनासक्तिए भ्रातृप्रेम और राजधर्म की उच्च भावना को सामने लाता है। वे प्राप्त राज्य को व्यक्तिगत अधिकार न मानकर राम की नैतिक श्रेष्ठता को स्वीकार करते हैं। दशरथ का चरित्र मानवीय करुणाए पुत्रप्रेम और वचनबद्धता के बीच उत्पन्न मानसिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। इसके विपरीत कैकेयी का चरित्र यह दिखाता है कि स्वार्थ, पुत्रमोह और अधिकारबोध जब विवेक पर हावी हो जाते हैं, तब मानव.मूल्य संकट में पड़ सकते हैं।

अयोध्याकाण्ड में आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति को धर्म और सत्य से जोड़ते हैं। भौतिक मूल्य सुव्यवस्थित राज्य, शासन और सामाजिक व्यवस्था के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। मनोवैज्ञानिक मूल्य पात्रों के अंतर्द्वंद्व, भावनाओं और निर्णयों के माध्यम से सामने आते हैं। सौन्दर्यात्मक मूल्य आदर्श चरित्रों और संबंधों के नैतिक सौन्दर्य में दिखाई देते हैं। सार्वभौमिक मूल्य मानवताए भ्रातृत्व, करुणा, कर्तव्य और लोकहित की व्यापक भावना को स्थापित करते हैं। इस प्रकार अयोध्याकाण्ड में मानव-मूल्य केवल कथन या उपदेश के रूप में उपस्थित नहीं हैंए बल्कि पात्रों के जीवन-निर्णयों द्वारा व्यवहार में प्रतिष्ठित होते हैं। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। राम मूल्यों का संरक्षण करते हैं, भरत उनका संवर्धन करते हैं, सीता और लक्ष्मण उन्हें पारिवारिक जीवन में साकार करते हैं तथा कैकेयी का प्रसंग मूल्य-विघटन के परिणामों को सामने रखता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वाल्मीकि रामायण का अयोध्याकाण्ड भारतीय मानव.मूल्य.चेतना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण साहित्यिक आख्यान है। इसमें व्यक्ति, परिवार, शासन और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने वाले मूल्यों का ऐसा समन्वित स्वरूप प्राप्त होता है, जिसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बनी हुई है। अयोध्याकाण्ड का मूल संदेश यही है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों सत्य, धर्म, त्याग, प्रेम, कर्तव्य और लोकहित जैसे मूल्यों का संरक्षण ही मनुष्य को वास्तविक अर्थ में श्रेष्ठ बनाता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, हिंदी अनुवाद सहित संस्करण 68 गोरखपुर, गीता प्रेस, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 21 श्लोक 41 पृष्ठ 294

2 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 21 श्लोक 42, पृष्ठ 294

3 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 27 श्लोक 7, पृष्ठ 312

4 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 21 श्लोक 39, पृष्ठ 294

5 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 102 श्लोक 2 पृष्ठ 510

6 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 100 श्लोक 40 व 41 पृष्ठ 504

7 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 50 श्लोक 35 पृष्ठ 373

8 वही, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 11 श्लोक, 26.27